Review - 2

Code - E - 207

पुस्तक का नाम - जीवविज्ञान शिक्षण
लेखक - डा० एस०पी० कुलश्रेष्ठ
डा० धर्मेन्द्र तोमर
डा० सतीश कुमार गिल

पब्लिकेशन - आर० लाल

गुण :→

(1) इस पुस्तक में लेखक ने प्रायोजना विधि के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया है।

(2) इस पुस्तक में लेखक ने यह बताया है कि प्रायोजना विधि विभिन्न मनोवैज्ञानिकों नियमों एवं सिद्धान्तो पर आधारित है।

(3) प्रायोजना विधि एक बाल केन्द्रित विधि है।

(4) इस पुस्तक में प्रायोजना विधि में छात्रों द्वारा स्वयं योजना बनाने तथा उसका क्रियान्वयन करने के कारण उनमें कार्य करने की तत्परता रहती है, जो कि प्रभावी अधिगम के लिये अति आवश्यक है।

(5) इसके द्वारा छात्रो में श्रम करने की आदत का विकास होता है।

(6) प्रायोजना विधि द्वारा छात्रों में रचनात्मक तथा सृजनात्मक योग्यताओं का विकास होता है।

(7) इस विधि द्वारा अर्जित ज्ञान स्थाई तथा दीर्घकालीन हो जाता है।

दोष → ① इस पुस्तक में लेखक ने यह बताया है कि व्याख्यान विधि मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है, क्योंकि इसमें छात्रों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। यह एक मूक श्रोता बना रहता है।

② यह अध्यापक केन्द्रित विधि है।

③ इस पुस्तक में यह बताया गया है कि व्याख्यान विधि स्मृति पर अधिक बल देती है।

④ व्याख्यान विधि से छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास नहीं हो पाता है।

⑤ इस विधि द्वारा छात्रों में स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास नहीं हो पाता है।

⑥ इस विधि द्वारा छात्रों में स्वतंत्र चिन्तन का विकास नहीं हो पाता है।

⑦ इस पुस्तक में यह बताया गया है कि व्याख्यान विधि में छात्रों की आवश्यकताओं, अनुभवों एवं रुचियों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है।

सुझाव :→

(1) इस पुस्तक में लेखक के द्वारा प्रकरण को समझाने के लिये चित्रों का प्रदर्शन भी करना चाहिये।

(2) इस पुस्तक में लेखक द्वारा कठिन शब्दों की जगह सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिये।

(3) इस पुस्तक में अधिक सरल भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिये, जिससे छात्र आसानी से समझ सके।

(4) प्रस्तुत पुस्तक में अच्छे क्वालिटी का कागज प्रयोग करना चाहिये।

(5) इस पुस्तक में लेखक को प्रस्तावना कौशल का प्रयोग करना चाहिये।

Review - 1

Code - E-207

पुस्तक का नाम - जीव विज्ञान शिक्षण
लेखक — डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ
डा० धर्मेन्द्र तोमर
डा० सतीश कुमार गिल

पब्लिकेशन — आर० लाल बुक डिपो

गुण →

① इस पुस्तक में लेखक ने व्याख्यान विधि के बारे में विस्तारपूर्वक बताया है।
② यह विधि आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें प्रयोग, प्रदर्शन आदि की आवश्यकता नहीं होती है।
③ इस पुस्तक में लेखक ने बताया है कि व्याख्यान विधि द्वारा एक ही अध्यापक द्वारा एक समय में बहुत बड़े समूह को भी पढ़ाया जा सकता है।
④ यह बहुत सरल, आकर्षक तथा तीव्र गति से चलने वाली विधि है।
⑤ यह विधि तथ्यात्मक ज्ञान एवं विज्ञान को ऐतिहासिक विवेचना हेतु सर्वोत्तम विधि है।
⑥ इस पुस्तक में लेखक ने यह बताया है कि इस विधि द्वारा शिक्षण करने पर समय नष्ट नहीं होता है।
⑦ विज्ञान के नवीन प्रकरणों का ज्ञान प्रदान करने तथा उनकी व्याख्या करने के लिये यह विधि उपयोगी है।

दोष :→

(1) इस पुस्तक में प्रयोगना विधि द्वारा शिक्षण करने पर समय तथा श्रम अधिक लगता है।

(2) इस पुस्तक में लेखक कहता है कि विज्ञान में प्रत्येक प्रकरण / प्रत्यय को इस विधि द्वारा पढ़ाना सम्भव नहीं है।

(3) प्रयोगना विधि अधिक खर्चीली होती है।

(4) इस पुस्तक में यह बताया गया है कि यदि प्रयोगना विधि का संचालन भली-भाँति न किया जाये तो इसमें कुछ ही छात्रों का प्रभुत्व हो जाता है।

(5) इसके द्वारा शिक्षण करने पर अधिक वैज्ञानिक उपकरण, प्रयोगशाला तथा अन्य सहायक और सम्बन्धी सामग्री की आवश्यकता होती है।

सुझाव :→

(1) इस पुस्तक में लेखक द्वारा कठिन शब्दों के स्थान पर सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिये।

(2) इस पुस्तक में प्रकरण को ठीक प्रकार से समझाने के लिये और अधिक चित्रों का प्रयोग करना चाहिये।

(3) इस पुस्तक में परिभाषाओं को और उचित ढंग से प्रस्तुत करना चाहिये।

(4) इस पुस्तक के प्रष्ठ मोटे होने चाहिये तथा पुस्तक अधिक समय तक प्रयोग की जा सके।

(5) इस पुस्तक का दृश्य स्वरूप अधिक आकर्षक होना चाहिये।